साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 43, अगस्त(द्वितीय) , 2018

श्रावणी शिवरात्रि विशेष:

सावन शिव को सबसे प्यारा

श्रावणी शिवरात्रि सबसे फलदाई !

घनश्याम बादल

कहा जाता है कि सावन भगवान शिव को सबसे ज्यादा प्यारा माह है । बरखा उन्हे सबसे ज्यादा सुहाती है । हरियाली में उनका वास है और अपने प्रति प्रेमभाव से कुछ भी अर्पित करने करने वाले भक्त उन्हे बहुत भाते हैं । वे शिव यानि कल्याण होने के साथ ही बहुत भोले हैं और इसी भोलेपन की वजह से उन्हे भोला कहते हैं उन्हे अपनी सादगी व सहज प्रसन्न हो जाने के गुण से देव नहीं महादेव का दर्जा मिला है ।

भक्तों के लिए हर वैभव

उनके पास अपने लिए भले ही वैभव न हो ,पर वें अपने भक्तों के लिए हर वैभव प्रदान करते हैं । वाहन के नाम पर मात्र, नंदी और संपदा के नाम पर केवल एक मृगछाला , कमंडल और त्रिषूल मात्र रखने वाले शिव तीन लोक धरती पर बसा कर खुद वीराने में रहते हैं । भले ही कंठ में विष और गले में सांप की माला हो पर त्रिलोकी शिव सबके जीवन में अमृत ही घोलते हैं ऐसे देवों के देव महादेव को प्रसन्न करने के लिए हर माह ही एक षिवरात्रि आती है पर सावन की शिवरात्रि का महत्व सबसे अलग है । अब , जबकि सावन शिव का अति प्रिय है तो शिव के इस अति प्रिय माह में उन्हे मनाने का मौका हाथ से न जाने दें और इस बार नौ अगस्त को आ रही श्रावणी मेले की षिवरात्रि में अपने इष्ट महादेव को प्रसन्न ज़रुर करें।

शिव कल्याण के प्रतीक

पुराणों के अनुसार शिव कल्याण के प्रतीक हैं वें पूरी तरह काम मुक्त, वीतरागी सृष्टि को हरा भरा रखने वाले देव हैं और देव - दानव , मानव, किन्नर सबका हित करते हैं । श्रावण मास में

कांवड़ के बहाने से शिव की इस माह पड़ने वाली श्रावणी शिवरात्रि पर विशेष उपासना होती है और वें खुश होकर सारी मनोकामनायें भी पूर्ण करते हैं ।

एक लौटा जल से ही प्रसन्न हो जाते शिव

शिव' अगर विश्व कल्याण का प्रतीक है तो 'रात्रि' अज्ञान अन्धकार से होने वाले नैतिक पतन का द्योतक है। शिव मानव मात्र को सत्यज्ञान द्वारा अन्धकार से प्रकाश की ओर , असत्य से सत्य की ओर ले जाते हैं। कहने वाले कहते हैं कि भगवान शिव एक लौटा जल प्रतिदिन शिव पर जढ़ाने मात्र से प्रसन्न हो जाते हैं और सबका कल्याण करते हैं। शिवरात्रि पर तो उपवास मात्र से ही इच्छित सुख की प्राप्ति होती है।

अनादि अनंत, सृष्टि के विनाशक व कर्ता

शिव के भक्तों का मानना है कि शिव के अतिरिक्त संसार में कुछ भी सत्य नहीं है। वें ही अनादि अनंत और सृष्टि के विनाशक व कर्ता हैं । भले ही षिव में तीनो लोकों को नष्ट करने की शक्ति हो पर वें ऐसा तब तक नहीं करते जब तक कि ब्रहमांड में एक भी कल्याणकारी तत्व मौजूद रहता है जब अधर्म असहनीय हो जाए तो शिव तीसरा नेत्र खोलकर सृष्टि का विनाश कर नई सृष्टि के निर्माण पथ प्रशस्त करते हैं ।

सभी देवताओं से भिन्न

भगवान शिव जितने सरल है उतने ही रहस्यमय भी हैं। उनका रहन-सहन, आवास, गण आदि सभी देवताओं से भिन्न हैं। वह अकेले ऐसे देव हैं जो वैभव से दूर श्मषान में भस्म रमाकर रहते हैं , और भाले इतने कि रावण , भस्मासुर तक को वरदान दे देते हैं राक्षसों को भी अभय दे देते हैं पर जब यें शक्तियां विनाषक व अनियंत्रित हो जाती है तो वें ही इनका नाश भी करते हैं । विश्व कल्याण के लिए वें स्वयं विषपान करते हैं और स्वयं नीलकंठ बन सब कष्ट सह जाते हैं । ऐसे ही अद्भुत देव शिव की उपासना का दिन है श्रावणी शिवरात्रि ।

पुराणों व मिथकों के अनूसार भगवान शिव ज्योतिर्लिंग रूप में प्रकट हुए थे। पौराणिक कथाओं के के अनुसार भगवान विष्णु नाभि से ब्रहमा जी का जन्म हुआ पर जल्द ही " हम दोनों में श्रेष्ठ कौन है " का विवाद होने लगा इस पर वहां एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ। उस ज्योतिर्लिंग

को वें समझ नहीं सके और उसके छोर का पता लगाने का प्रयास किया, परंतु सफल नहीं हो पाए। जब दोनों देवता निराश हो गए तब उस ज्योतिर्लिंग ने अपना परिचय देते हुए कहा "मैं शिव हूं , और मैंने ही आप दोनों को उत्पन्न किया है।"तब से ही विष्णु तथा ब्रह्मा ने भगवान शिव की महत्ता को स्वीकार किया और उसी दिन से शिवलिंग की पूजा की जाने लगी।

कैसे करें पूजा

मान्यता है कि आज के दिन मिट्टी के बर्तन में पानी भरकर ऊपर से बेलपत्र, आक , धतूरे के पुष्प, चावल आदि डालकर शिवलिंग पर चढ़ायें अगर पास में शिवालय न हो तो शुद्ध गीली मिट्टी से ही शिवलिंग बनाकर उसकी पूजा करें रात्रि को जागरण करके शिवपुराण का पाठ सुनना हरेक व्रती का धर्म माना गया है। अगले दिन सवेरे जौ, तिल, खीर और बेलपत्र का हवन करके व्रत समाप्त करेंमहाशिवरात्रि भगवान शंकर का सबसे पवित्र दिन है, आत्मा को पुनीत करने का महाव्रत है। इसके करने से सब पापों का नाश हो जाता है। हिंसक प्रवृत्ति बदल जाती है। निरीह जीवों के प्रति दया भाव उपज जाता है। ईशान संहिता में इसकी महत्ता का उल्लेख इस प्रकार किया गया है. **"शिवरात्रि व्रतं नाम सर्वपापं प्रणाशनम आचाण्डाल मनुष्याणं भुक्ति मुक्ति प्रदायकं । "**

शिवरात्रि पर शिव की पूजा के फल :

शिव हर तरह की कामना पूरी करने वाले देव हैं हर तरह के फलों से वें भक्तों की झोली भरते हैं आइए देखें णरणओं के अनुसार इस श्रावणी शिवरात्रि पर पूजा से शिव क्या दे सकते हैं ।

कारोबार में वृद्धि:

शिवरात्रि के सिद्ध मुहर्त में पारद शिवलिंग को प्राण प्रतिष्ठित करवाकर स्थापित करने से व्यवसाय में वृद्धि व नौकरी में तरक्की मिलती है।

बाधा नाशः

शिवरात्रि के प्रदोष काल में स्फटिक शिवलिंग को शुद्ध गंगा जलए दूधए दहीए घीए शहद व शक्कर से स्नान करवाकर धूप.दीप जलाकर निम्न मंत्र का जाप करने से समस्त बाधाओं का शमन होता है। "तुत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रूद्ररू प्रचोदयात्" का जाप करें ।

बीमारी से छुटकारा:

शिव मंदिर में लिंग पूजन कर दस हजार मंत्रों का जाप करने से प्राण रक्षा होती है। महामृत्युंजय मंत्र का जाप रुद्राक्ष की माला पर करें।

शत्रु नाश:

शिवरात्रि को रूद्राष्टक का पाठ यथासंभव करने से शत्रुओं से मुक्ति मिलती है। मुकदमे में जीत व समस्त सुखों की प्राप्ति होती है।

मोक्ष प्राप्ति :

शिवरात्रि को एक मुखी रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करवाकर धूप.दीप दिखा कर तख्ते पर स्वच्छ कपड़ा बिछाकर स्थापित करें। शिव रूप रूद्राक्ष के सामने बैठ कर सवा लाख मंत्र जप का संकल्प लेकर जाप आरंभ करें। जप शिवरात्रि के बाद भी जारी रखें।

आय वृद्धि:

हर इंसान चाहता है कि उसकी इंकम बढ़ती रहे लेकिन यह संभव नहीं है। कई बार अधिक मेहनत करने के बाद भी उसका फल नहीं मिल पाता। यदि आप भी चाहते हैं कि आपकी इंकम बढने लगे तो शिवरात्रि के दिन घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और उनका यथाविधि पूजन करें। इसके बाद ऐं ह्रीं श्रीं ऊँ नमः शिवाय श्रीं ह्रीं ऐं मंत्र का 108 बार जप करें- प्रत्येक मंत्र के साथ बिल्वपत्र पारद शिवलिंग पर चढ़ाएं। बिल्वपत्र के तीनों दलों पर लाल चंदन से क्रमशः ऐं, ह्री, श्रीं लिखें। यह प्रयोग चालीस दिन तक करें। अंतिम दिन जो 108 वां बिल्वपत्र रहे, उसे शिवलिंग पर चढ़ाने के बाद निकाल लें तथा उसे एक कांच के फ्रेम में मढ़वाकर प्रतिदिन उसकी पूजा करें। माना जाता है कि शीघ्र ही इंकम बढने लगती है ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें